3. विचार स्वीकृति - Accepting Feeling.
इसमें अध्यापक छात्रों के विचारों को स्वीकार करते हुए छात्रों को सुझाव देता है जैसे छात्र छात्रा कही बात दुहराता हो या छात्र द्वारा दिये गये उत्तर के विषय में कहता है, तुमने ठीक लेकिन मेरे विचार से - - -|

4. प्रश्न पूछना - Asking Questions.
इस वर्ग के अन्तर्गत अध्यापक द्वारा पूछे गये के प्रश्न वही प्रश्न आयेंगे जिनका उत्तर छात्रों को देना होगा। आलोचनात्मक अथवा आदेशात्मक प्रश्न नहीं होंगे।

5. भाषण वक्तव्य (Lecturing -
जब छात्रों को अध्यापक ज्ञान अथवा विचार देने हेतु भाषण देता हो या व्याख्या कर कोई बात समझाता हो वह इसी वर्ग में आती है।

6. निर्देश देना - Giving Direction
अध्यापक द्वारा छात्रों को दिया गया निर्देश जैसे कोई यह प्रश्न लिखो, पुस्तक खोलकर पढ़ो या आगे सोचने की बात कहता है, ऐसे निर्देश इसी वर्ग में आते है।

7. आलोचना Criticizing -
आलोचनात्मक बात का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है जैसे यह गलत कर रहे हो, इसे इस तरह से करो आदि कथन इसी वर्ग में आते है।

8. छात्रों के उत्तर — Responding to teacher
अध्यापक द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में छात्रों द्वारा कहे गये उत्तर या वाक्य इसी के अन्तर्गत आयेंगे।

प्रारम्भिक कथन - Initiatory Talk -
छात्रों द्वारा शंकाएँ उठाना या अपने विचार व्यक्त करना
इस वर्ग में अंकित होगा।
मौन अथवा भ्रम - Silence or confusion -
जब कक्षा में मौन हो, जब न कोई प्रश्न पूछा जाये,
न उत्तर दिया जाता हो, ऐसे लगे जैसे कुछ समझ में
नहीं आता तो इसी वर्ग में ऐसी स्थितियों को
अंकित किया जाता है

साक्षरता, कक्षा-कक्ष में मौखिक एवं लिखित
भाषा का प्रयोग - Literacy, oral and
Written Language used in class-Room -

साक्षरता - Literacy

साक्षरता निरक्षरता का विलोम शब्द है साक्षरता से
आशय अक्षर ज्ञान से होता है साक्षरता के
अन्तर्गत लिखना, पढ़ना तथा गणना करना आता
है जो व्यक्ति सामान्य रूप से अक्षरों का ज्ञान
रखता है, अपने हस्ताक्षर कर लेता है तथा लिखना
भी जानता है और थोड़ा बहुत गणित के ज्ञान
के आधार पर हिसाब-किताब रख लेता है
वह साक्षर कहलाता है

मौखिक भाषा का कक्षा-कक्ष में प्रयोग
Use of oral Language in class-Room

मौखिक भाषा को उच्चारित भाषा भी कहा जाता
है भाषा के उच्चारित रूप का व्यवहार हम अपनी
बोलचाल की भाषा में प्रतिदिन करते हैं

कक्षा - कक्ष में अन्तःक्रिया करते समय, प्रश्नों के उत्तर देते समय तथा शिक्षक को अपनी बात बतलाते समय एवं अन्य छात्रों के साथ सम्भाषण करते समय मौखिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। मौखिक भाषा हमारी बातचीत की भाषा होती है इसलिए भाषा से पूर्व बच्चा मौखिक भाषा सीखता है। मौखिक रूप में भाषा क्षणिक या अस्थायी होती है। कक्षा - कक्ष में हम जो कुछ भी बोलते हैं वह बोलने के साथ-2 हवा में उड़ जाता है। उसे यदि हम पकड़ना चाहें तो भी नहीं पकड़ सकते हैं। आज विज्ञान का युग है। विज्ञान में प्रतिदिन नये-2 आविष्कार हो रहे हैं। विज्ञान ने भाषा के उच्चरित अथवा मौखिक रूप को कुछ स्थायी बना दिया है। जैसे - नभवाणी Radio तथा दूरदर्शन Television के द्वारा हम दूर बैठे हुए भी किसी बात को सुन सकते हैं। सौभाग्य Gramophone तथा ध्वनि लेख Tape Recorder के द्वारा हम उच्चरित या मौखिक भाषा को बहुत समय तक सुरक्षित रख सकते हैं परन्तु मौखिक भाषा को अस्थायी भाषा के रूप में ही देखा जाता है।

डासन - Dason - "मौखिक अभिव्यक्ति भाषा की नींव तैयार कर देती है।"

* कक्षा - कक्ष में मौखिक भाव प्रकाशन के समय ध्यान रखने योग्य बातें - Points to be Remembered while Making Oral Expressions in class. Room
* कक्षा - कक्ष में मौखिक भाव प्रकाशन के समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. उच्चारण के अभ्यास के लिए अथवा त्रुटियों को ठीक करने के लिए स्वर यन्त्रों को साधा जाए।
2. यदि कोई बालक प्राकृतिक कारणों से शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता हो उसका कारण डॉक्टरों द्वारा खोजकर उसके संरक्षकों को सूचित कर चिकित्सा कराई जाए।
3. शिक्षक बोलने का आदर्श दृष्टान्त उपस्थित करें जिसमें शैली, क्रोध तथा शीघ्रता न हो।
4. किसी भी प्रकार का संकोच बच्चों में न आने पाए।
5. बालक किसी भी प्रकार अपने को कक्षा के अन्य छात्रों से हीन न समझे। इसके लिए उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।
6. बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने और पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए जिससे उनमें धीरे-धीरे साहस और स्वावलम्बन का विकास होने लगे।
7. बोलते समय सस्वरता तथा भावानुसार वाणी के उतार चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए।
8. भाषा में सरलता, मधुरता और लालित्य हो।

* मौखिक भाव-प्रकाशन के अन्य साधन
Different Means of Oral Emotional Publication
मौखिक भाव प्रकाशन में कुशलता प्राप्त करने में निम्नलिखित साधन सहायक होते हैं।

1. कहानी कथन – कहानी सुनना तथा सुनाना बालकों की सबसे प्रिय वस्तु है। इससे उनमें जिज्ञासा, अवधान और रुचि का विकास होता है।

इसके द्वारा भाषण में स्वाभाविकता और प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है। इसमें मनोरंजकता के साथ उनकी कल्पना-शक्ति को भी सक्षम किया जा सकता है।

2. सत्संग – सत्संग का हमारे भाव-प्रकाशन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। साधारणतः बालक जैसे वातावरण में रहेगा, उसका उसी प्रकार का वार्तालाप या भाव प्रकाशन होगा। सुन्दर, योग्य तथा शिष्ट बालक स्वरूप तथा शिष्ट वातावरण में ही पाये जाते हैं।

3. संवाद-पाठ – संवाद-पाठों से सम्भाषण की शिक्षा का अभ्यास भली प्रकार कराया जा सकता है। विभिन्न अवसरों पर योग्य भाषा का अभ्यास कराने के लिए अध्यापक को संवाद-पाठ कराते रहना चाहिए। इससे बालक देश-काल तथा पात्र के अनुसार वार्तालाप करने की महत्ता समझते हैं और उनके अभ्यस्त हो जाते हैं।

4. वाद-विवाद – वाद-विवाद बालक के मानस द्वार खोलने की कुंजी है। इससे अध्ययन-मनन तथा चिंतन का अभ्यास होता है, तर्क की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। अपने विचारों को सुव्यवस्थित एवं सुव्यवस्थित रूप में रखने का बालक प्रयास करने लगता है।

5. चित्र-माला – चित्रों को दिखाकर उसके द्वारा मौखिक भाव-अभिव्यक्ति में बालक के भावों को सचेत कर मौखिक का अवसर प्रदान करना चाहिए।

लिखित भाषा का कक्षा-कक्ष में प्रयोग

Use of Written Language in class-Room

कक्षा-कक्ष में लिखित भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। लिखित भाषा को हम तब व्यवहार में लाते हैं, जब हमें अपना सन्देश किसी ऐसे व्यक्ति को पहुँचाना हो जो हमसे दूर हो। परम्परागत तथा वर्तमान विचारों को आगे आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने के लिए भी लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है।